# चलन और चेहरे को सन्तुष्टता और प्रसन्नता सम्पन्न बनाओ

आज जब मैं बाबा के पास मीटिंग का समाचार और कुछ यज्ञ की कारोबार के लिए दादी जी का सन्देश लेकर वतन में गई तो हर समय का नज़ारा न्यारा ही होता है। तो आज जब मैं वतन में पहुँची तो बाबा दूर खडे थे और मुझे देख करके दूर से बहुत मीठा मुस्करा रहे थे। बाबा मुस्कुराते तो सदा ही हैं लेकिन आज की मुस्कुराहट में ऐसे अनुभव हो रहा था जैसे बाबा के अन्दर कोई बात आ रही है। तो जब मैं नजदीक पहुँची तो बाबा की मुस्कुराहट और बढ़ती गई। मैंने कहा, बाबा आज आप विशेष कोई बात पर मुस्करा रहे हैं। तो बाबा बोले – हाँ बच्ची, बापदादा ने बच्चों का एक बहुत रिम-झिम का दृश्य देखा। तो मैंने सोचा कि बाबा ने ऐसा क्या देखा! तो बाबा ने ही कहा कि बच्ची बाबा ने बच्चों के सेवा के उमंग-उत्साह की रिमझिम देखी। कैसे हर एक ज़ोन, हर एक वर्ग बहुत उमंग से सेवा के अपने-अपने प्रोग्राम्स बना रहे थे, यही रिम-झिम देख करके बाबा मुस्कुरा रहे हैं। मैंने कहा बाबा ये तो सदैव करते ही हैं। तो बाबा ने कहा – नहीं, करते तो सदा हैं लेकिन बाबा देख रहे थे कि बच्चों में सेवा का उमंग ज़्यादा है, सेवा के प्रति अपना समय, अपना आराम और अपने साधन इकट्ठे करने में बहुत अच्छे उमंग से आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा सेवाधारियों की यह सेवा देख करके तो बहुत खुश हैं और वाह-वाह के गीत भी गाते हैं। बापदादा देखते हैं कि बच्चे सेवा के प्रति कितना कुर्बान होने के लिए तैयार हो जाते हैं।

ऐसा कहते-कहते बाबा एकदम शान्त हो गये, ऐसे लगा जैसे बाबा यहाँ है ही नहीं। मैं बाबा को देख रही हूँ, बाबा मुझे भी देख रहे हैं लेकिन यहाँ हैं नहीं। थोड़े समय के बाद मैंने पूछा – बाबा आप कहाँ चक्कर लगाने गये थे। तो कहा बच्ची मेरे आगे बच्चों का यह गुलदस्ता इमर्ज था। इनको मैं देख रहा था, और देखते-देखते बाबा का एक बहुत डीप संकल्प चल रहा था। उसमें ही बाबा जैसे लीन थे। मैंने कहा बाबा वह संकल्प क्या था? तो बाबा ने कहा बच्ची जैसे मैजारिटी सब बच्चे सेवा में एवररेडी रहते हैं, हिम्मत भी रखते हैं और आगे भी बढ़ते हैं। उसका परिणाम है जो इतने सेन्टर खुल गये हैं, इतने बाबा के बच्चे बन गये हैं। लेकिन अभी तक बाबा का एक संकल्प बच्चों के कानों तक, दिमाग तक पहुँचा है लेकिन दिल तक नहीं पहुँचा है। ऐसे कहते बाबा फिर एक सेकण्ड जैसे उसी संकल्प में बिल्कुल लीन हो गये। फिर बाबा ने कहा कि बाबा देख रहे थे कि सभी बच्चों ने 'संस्कार परिवर्तन' के लिए प्रोग्राम बनाये हैं, भट्ठियां भी रखी हैं। लेकिन बाबा चाहता था कि यह गुलदस्ता जो आया है इसमें कौन ऐसा बच्चा निकलता है जो कहे कि बाबा आप जो कहते हो वह मैं एक मास में आपको वैसा ही करके ही दिखाऊँगा। जैसे सेवा के उमंग-उत्साह में कहते हैं कि हम भी करेंगे, हम भी करेंगे, हम भी करेंगे... उस पर तो बाबा कुर्बान जाता है। लेकिन ऐसा कोई बच्चा नहीं निकला जो यह ठेका उठाये कि हम 15 दिन में, 1 मास में, 2 मास में, 3 मास में यह करके ही दिखाऊँगा! बाबा की इस गुलदस्ते में यही शुभ आशा है, और बनना तो इन्हों को ही है, दूसरे नये अभी क्या आयेंगे। वह तो कोटो में कोई होंगे। तो बाबा ने कहा कि मैं देख रहा था कि ऐसा कोई समाचार लास्ट तक आता है! मैंने कहा बाबा संकल्प तो कईयों ने किया होगा। बाबा ने कहा, संकल्प तो किया है लेकिन संकल्प में परिपक्वता, यह अभी ध्यान देना पड़ेगा।

फिर बाबा ने कहा कि बाबा चाहते हैं कि पहले-पहले कोई सेन्टर की सेवाधारी निमित्त बहन या साथी बाबा के आगे यह संकल्प करे कि पहले 'चैरिटी बिगिन्स एट होम'। सेन्टर की निमित्त, सेवा साथी और सेन्टर में आने वाले जो सहयोगी आत्मायें, वारिस वा ब्राह्मण आत्मायें हैं, सभी का ऐसा गुलदस्ता बाबा के सामने आये - जैसे

मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि चपरासी सहित, सर्वेन्ट सहित जिससे भी पूछा वह 'नष्टोमोहा' की झलक वाला दिखाई दिया। ऐसे सेवाकेन्द्र का हर एक छोटा-बड़ा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी ड्युटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता'' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे। तो बाबा ने कहा कि बाबा की यह 'शुभ आशा' इस ग्रुप के लिये है। मैंने कहा बाबा अभी एक दिन तो पड़ा है, यह भी हो जायेगा। तो बाबा बोले नहीं बच्ची, इसमें

ढ- सहन करना पड़ता है। लेकिन सहन करना न समझ, ऐसे समझें कि मैं आज्ञाकारी बनने का, स्वमान का तिलक बापदादा द्वारा धारण कर रहा हूँ। सहन नहीं कर रहा हूँ, आज्ञाकारी का यह तिलक धारण कर रहा हूँ।

ञ- जो कई बच्चे कहते हैं कि इसमें तो बहुत झुकना पड़ता है। लेकिन झुकना नहीं पड़ता है, उड़ना पड़ता है। यह झुकना नहीं उड़ना है।

ट- बाबा ने कहा कई बच्चे कहते हैं क्या हमको ही मरना है, एक तो मरजीवा बनें, अभी हर बात में हमें ही मरना है। तो बाबा ने कहा यह मरना नहीं है, यह माननीय बनना है।

बाबा के प्यार में सहन करना, सहन नहीं है, यह त्याग का भाग्य लेना है। इस त्याग का प्रत्यक्ष फल मिलना है। भविष्य तो परछाई है ही। बाबा यह शब्द बहुत स्नेह से बोल रहे थे, बाबा की ऐसी स्नेह की सूरत थी, जो बाबा के नयन भी भरे हुए थे।

उसके बाद बाबा से यज्ञ की कारोबार के बारे में कुछ बातें की। बाबा ने कहा कि बच्ची चाहे माउण्ट आबू, चाहे देश-विदेश में सब तरफ जो ईश्वरीय कार्य चल रहा है, इसका प्रभाव अभी बढ़ रहा है और भी बढ़ता रहेगा। जैसे पहले आप स्वयं स्टेज पर कोई मिनिस्टर, कोई भी आई.पी., वी.आई.पी. बुलाते थे, चाहे कोई भी हो लेकिन संस्था को आगे बढ़ने वा एडवरटाइज़ के कारण बुलाते थे। लेकिन अभी परिवर्तन हुआ है और भी होगा और भी बड़े बड़े जो भी मिनिस्टर्स हैं या साधू सन्त हैं, अभी सब आपको अपनी स्टेज पर बुलाते हैं, समझते हैं इन्हों के कारण हमारी स्टेज का प्रभाव बढ़ेगा। तो जैसे अभी बनी बनाई स्टेज मिलती है और अभी आपको

निमन्त्रण नहीं देना पड़ता लेकिन वह आपको निमन्त्रण दे रहे हैं।

उसके बाद बाबा ने कहा अच्छा, दादी ने सबको सौगात दी ? मैंने कहा सौगात तो लास्ट दिन मिलती है। कहा अच्छा दादी जब तक देवे पहले बाबा दे रहा है। बाबा ने बहुत वण्डरफुल सौगात दी। एक सेकण्ड में क्या देखा यह जो ग्रुप आया हुआ है, वह सारा ग्रुप जैसे बाबा के सामने अर्ध-चन्द्रमा के मुआफिक खड़े थे और बाबा ने चारों ओर दृष्टि दी। तो जैसे जैसे बाबा दृष्टि देता गया पहले लाइन में दिया, दूसरे में दिया, तीसरी में दिया, चौथी में दिया तो दृष्टि के साथ हर एक के मस्तक से जैसे कोई लाइट का मशाल जलता है, ऐसे यहाँ मस्तक से मशाल के मुआफिक एक कमल के पुष्प जैसा था उससे भिन्न-भिन्न लाइट्स सकाश जैसी फैल रही है। यह एक वण्डरफुल मशाल था, साधारण नहीं था, कमल के पुष्प से बहुत प्रकार की लाइट्स फैल रही थी, जब सभी के मस्तक में जगता हुआ मशाल दिखाई दे रहा था तो भिन्न-भिन्न लाइट्स एकदम चारों ओर तीन लोकों तक जैसे जा रही थी। ऐसे चारों ओर जैसे बहुत फैली हुई लाइट निकल रही थी। तो बाबा ने कहा अच्छा बच्चों को यह 'रूहानी-मशाल' सर्व को सकाश देने, स्व-परिवर्तन, विश्व-परिवर्तन के लिए गिफ्ट में दे रहे हैं। ऐसे बाबा ने गिफ्ट दी और हम बाबा से विदाई ले यहाँ साकार वतन में आ गये। अच्छा - ओम् शान्ति।